ISSN No 2347-7075
Impact Factor- 7.328
Volume-2 Issue-7

INTERNATIONAL JOURNAL of ADVANCE and APPLIED RESEARCH

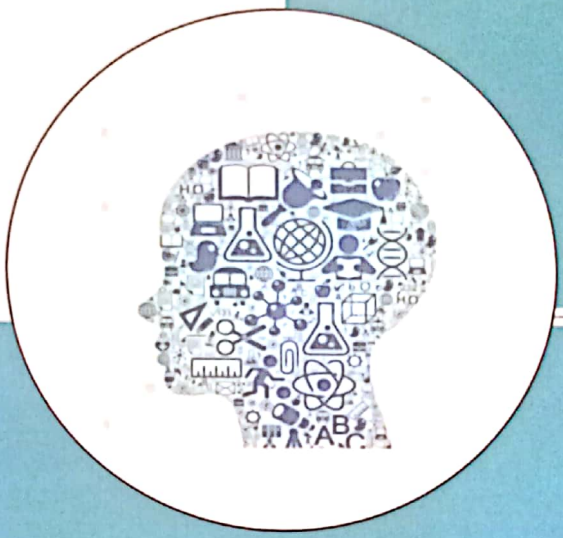

Publisher: P. R. Talekar
Secretary,
Young Researcher Association
Kolhapur(M.S), India

Young Researcher Association

Scanned with OKEN Scanner

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN - 2347-7075
Impact Factor -7.328
Vol.2 Issue-7 March- Apr 2022

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)

A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal

March-Apr Volume-2 Issue-7

On

Chief Editor
P. R. Talekar
Secretary
Young Researcher Association, Kolhapur (M.S), India

Editor
Prof. Dr. V. V. Killedar
Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur

Co- Editors

डॉ. एस. पी. पवार	लैफ्ट.डॉ. आर.सी. पाटील	डॉ. एस. जे. आवळे
प्रा. एन.पी. साठे	प्रा. ए. बी. घुले	प्रा. डॉ.एम. टी. रणदिवे
	डॉ. एन. ए. देसाई	

Published by- Young Researcher Association, Kolhapur (M.S), India

The Editors shall not be responsible for originality and thought expressed in the papers. The author shall be solely held responsible for the originality and thoughts expressed in their papers.

© All rights reserved with the Editors

Scanned with OKEN Scanner

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor –7.328
Vol.2 Issue. 7 Mar-Apr 2022

CONTENTS

Sr. No.	Paper Title	Page No.
1	हिंदी उपन्यास और दलित विमर्श डॉ. लिपारे अजित विट्ठल	1-2
2	पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' उपन्यास का नायक किन्नर विनोद अनिल विट्ठल मकर	3-4
3	भूमंडलीकरण और 21 वीं सदी की हिंदी कविता में प्रतिबिंबित मानवी मूल्य डॉ. अशोक मरळे	5-7
4	दूसरा घर' उपन्यास में महानगरीय जीवन प्रा. डॉ. बेबी राघू कोलते	8-9
5	मृदुला गर्ग के कथा साहित्य मे स्त्री विमर्श डॉ. भागवत भगवान देवकाते	10-11
6	'मढ़ी का दीवा' उपन्यास में नारी सम्मान की अभिव्यंजना श्री अक्षय राजेंद्र भोसले	12-15
7	दीप्ती खंडेलवाल की कहानियों में अभिव्यक्त नारी के विविध आयाम प्रा.डॉ. एकलारे चंद्रकांत नरसप्पा	16-17
8	ममता कालिया के 'कितने प्रश्न करूँ' खंडकाव्य में स्त्री – विमर्श प्रा. डॉ. दयानंद बी पाटील	18-19
9	सलिल सुधाकर की कहानियों में महानगरीय जीवन दिपाली विकास जाधव	20-21
10	कृषक जीवन की समस्या दया शंकर यादव	22-25
11	इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में पारिस्थितिकी चिंतन प्रो. डॉ. सदानंद भोसले, प्रा.एन.बी.एकिले	26-28
12	राष्ट्र के उन्नयन के लिए आदर्श चरित्रों की आवश्यकता : 'मिल्कियत की बागडोर डॉ. एकनाथ श्रीपती पाटील	29-32
13	हिंदी साहित्यः नारी विमर्श- "प्रभा खेतान का उपन्यास 'आओ पेपे घर चले' के संदर्भ में" प्रा. डॉ.जेनेट फिलिप बोर्जिस	33-35
14	आदिवासी दलित विमर्श में वीरेन्द्र जैन का चित्रण के. प्रमीला	36-38
15	नागार्जुन' के उपन्यासों में किसान विमर्श प्रा. कैलास बबन माने	39-41
16	हिंदी कहानियों में प्रतिबिंबित नारी विमर्श डॉ. काकासो बापूसो भोसले	42-44
17	भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में स्त्री लेखन और रूढ़िमुक्त नारी डॉ.कल्पना पाटोळे	45-47
18	चंद्रकांता के 'अंतिम साक्ष' उपन्यास में नारी विमर्श डॉ.रंजना अप्पासाहेब कमलाकर	48-49
19	हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्श डॉ. महिपती जगन्नाथ शिवदास	50-51
20	अस्तित्व उपन्यास में अस्तित्व की तलाश: किन्नर विमर्श के संदर्भ में डॉ मंजु पुरी	52-55
21	भगवान गव्हाडे की कविताओं में आदिवासी चेतना विशेष संदर्भ 'आदिवासी मोर्चा डॉ. मनोहर जमधाडे	56-57
22	आधुनिक हिंदी कथा साहित्य में नारी-विमर्श प्रा. मारुफ मुजावर	58-59
23	हिंदी उपन्यासों में भूमण्डलीकृत भारत डॉ. मीनाक्षी चैधरी	60-62

Scanned with OKEN Scanner

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly
ISSN – 2347-7075
Impact Factor –7.328
Vol.2 Issue.7 Mar - Apr 2022

आधुनिक हिंदी कथा साहित्य में नारी-विमर्श

प्रा. मारुफ मुजावर
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग, चंद्राबाई शांताप्पा शेंदुरे कॉलेज, हुपरी, जि. कोल्हापुर.
मेल : marufmujawar@gmail.com

नारी विमर्श वर्तमान युग का सर्वाधिक चर्चित विषय रहा है। समय के साथ बदलती नारी की स्थिति एवं रूपों को साहित्य में अभिव्यक्त किया जा रहा है। नारी सदियों से पुरुषों के साथ हजारों वर्षों से विभिन्न अनुभव को लेकर अपना जीवन व्यतीत कर रही है। नारी को जननी माता के रूप में पुजनीय माना गया है। फिर भी नारी को असंख्य अभावों का मुकाबला निरंतर करना पड़ता है। पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, वैज्ञानिक, कला, क्रिडा आदि अनेक क्षेत्रों में उन्होंने सफलता से जुड़े कार्य संपन्न किए हैं। वस्तुत: देखा जाय तो मानव जाती की विकास का मूल स्रोत नारी है। वह मानव के सामाजिक जीवन की रीढ़ है। फिर भी उसका सामाजिक स्थान पर आज भी अनेक प्रश्नचिन्ह खड़े हैं। आधुनिका नारी का वास्तव चित्रण हिंदी के बखुबी कथा-साहित्य में चित्रीत किया गया है।

हिंदी साहित्य में नारी विमर्श का प्रारंभ कथा-साहित्य से होता है। हिंदी के वर्तमान आधुनिक कथा-साहित्य में नारी समाज की त्रासदी और विड़बना, उसकी शोषित स्थिति, उसकी आर्थिक, सामाजिक, पराधीनता, सदियों से चले आ रहे स्त्री-संबंधी, सामंतीय मूल्यों, रुढ़िग्रस्त मान्यताओं और धारणओं से जुड़े प्रश्नों को खुले, तीखे एवं सासहपूर्ण ढंग से अभिव्यक्त करने का प्रयास किया जा रहा है। पुरुष प्रधान समाज में नारी ई नियति को दर्शाने के प्रयास कथा लेखक और लेखिकाओं ने बराबर किए हैं। लेकिन यह माना गया है कि भोक्त होने के कारण एक नारी अपने वर्ग की समस्याओं पर अधिक प्रामाणिक ढंग से लिख सकती है। आज नारीवादी भूमिका को लेकर लिखे गए साहित्य में नारी लेखिकाओं के साथ-साथ पुरुष लेखकों ने भी अहम भूमिका निभाई है। जिनमें प्रेमचंद, यशपाल, निराला, रामदरश मिश्र, सुरेंद्र वर्मा, भीष्म साहनी, विष्णु प्रभाकर, निर्मल वर्मा, राजेंद्र यादव, सुधीश पचौरी, अरुणसिंह, सुधा अरोडा, नासिरा शर्मा, शशीप्रभा गुप्ता, क्षमा शर्मा, राजी सेठ, चित्रा मुद्गल, अर्चना वर्मा, निरुपमा सेवती, मैत्रेयी पुष्पा, प्रभा खेतान, कात्यायनी, मेहरुन्नीसा परवेज, मालती जोशी, मृदुला गर्ग आदि ने नारी लेखन को दिन-ब-दिन समृद्ध किया है।

आधुनिक हिंदी नारीवादी साहित्य का बुनियादी दायित्व नारी को खुद की अस्मिता की पहचान कराना है। उसे सीमित दायरे से बाहर निकालकर स्वाभिमानी एवं स्वतंत्र जीवन प्रदान करता है। जैसे प्रभा खेतान की 'आओ पेपे घर चले' की नायिका परंपरागत बंधनों को त्यागकर अस्तित्व को बनाए रखने में संघर्ष करती है। इसी प्रकार क्षमा शर्मा की 'रास्ता छोड़ो डार्लिंग' कहानी नारी अस्मिता की परिचायक है। अत: नारीवादी साहित्य नारी को माँ, बहन, बेटी, बीवी की कोटि से बाहर निकालकर उसे एक मानव के रूप में स्थापित करता है। साथ ही नारी-विमर्श नारी को अपनी अस्मिता के साथ-साथ सामाजिक और राजनीतिक प्रतिष्ठा दिलाने के लिए संघर्ष करता है, जिसमें राजी सेठ की 'गलत नारी होता पंचतंत्र' में सामाजिक प्रतिष्ठा को उभारा गया है।

प्रभा खेतान का 'छिन्नमस्ता' और 'पिली आंधी' उपन्यास में पुरुषों की रुग्ण मानसिकता के खिलाफ आवाज उठाकर आर्थिक स्वतंत्रता को नारी मुक्ति का सशक्त आधार बनाया। चित्रा मुद्गल ने 'आवां' उपन्यास में मजदूर की बेटी नमिता पांडे के संकल्पों, संघर्षों, मोहभंग, पलायन और वापसी को समय और समाज के संदर्भों में परिक्षित किया है। नारी को यौन शुचिता के बंधन, अनेक रुढ़िग्रस्त विचार एवं पारिवारिक आर्थिक बंधनों से मुक्ति दिलाना ही हिंदी नारी विमर्शपरक साहित्य का मूल उद्देश्य रहा है। अनिता राकेश की कहानी 'अर्थसत्य' की नारी आधुनिक चेतना से संपन्न नारी है तो चित्रा मुद्गल की 'एक जमीन अपनी' आदि रचनाएँ नारी मुक्ति की चित्कार को लेकर चलती हैं। संभवत: हिंदी नारीवादी कथाकारों ने पारिवारिक पातिव्रत्य धर्म का विरोध अपने कथा-साहित्य में किया है, जिसमें निर्मल वर्मा की 'लवर्स' कहानी का नायक नायिका से शादी करना चाहता है, लेकिन नायिका शादी के बंधन में बँधकर गुलाम नहीं बनना चाहती अपितु वह जिंदगीभर मित्र के समान रहना चाहती है। अर्चना वर्मा की त्यौहार कहानी की नायिका नारी की पारंपारिक छवि का अस्विकार करती है।

नारी विमर्श का स्वर मुख्यत: नारियों की आर्थिक निर्भरता की माँग करता है। आर्थिक स्वावलंबन के अभाव में नारी परिवार में शोषित वर्ग की भूमिका निभाती है। हिंदी उपन्यासकारों ने इस सत्य को ओझल नहीं होने दिया है कि नौकरी करनेवाली या मॉडलिंग, अभिनय आदि से जुड़ी नारियाँ पुरुष प्रधान समाज के अवमूल्यों को चुनौती देने की स्थिति में होती है। अर्चना सिंह की 'मुझे जीना आता है' कहानी नारी की आर्थिक निर्भरता की माँग करती है। जब नायिका को नौकरी का नियुक्तिपत्र मिलता है तो घरवालों के विरोध के बावजूद भी वह नौकरी करती है। साथ ही नारी-विमर्श नारी-नर की समानता पर बल देते है, जिसमें कृष्ण सोबती, रामदरश मिश्र आदि की रचनाएँ इसका प्रमाण खड़ा करती हैं। नारी-विमर्श की अभिव्यक्ति का मूल स्वर नारियों की आर्थिक आत्मनिर्भरता एवं नारी-पुरुष की समानता के ईर्दगिर्द घूमता रहा है। 'बेतवा बहती रही' कहानी में मैत्रेयी पुष्पा ने आज की नारी मात्र को वस्तु मानने पर प्रश्न खड़ा किया है।

प्रचलित सामाजिक व्यवस्था के प्रति विद्रोह करना नारीवादी साहित्य की विशेषता रही है। ऐसी व्यवस्था के विरोध में आवाज उठानेवाली कथाकारों में मंजुल भगत, मन्नू भंडारी, कृष्ण सोबती, तसलिमा नसरिन, सुधा अरोडा आदि प्रमुख हैं। तसलिमा नसरीन के 'लज्जा' और 'तीसरी मुट्ठी' उपन्यास में नारी का क्रूर सामाजिक व्यवस्था के प्रति विद्रोह दिखाई देता है। क्षमा शर्मा की 'परछाई अन्नपूर्ण' कामकाजी महिलाओं के संकट, संघर्ष और सामाजिक स्थितियों के संदर्भ हैं। इस नारी के एक आँख में आँसू हैं तो दूसरी आँख में दुनिया बदलने का मजबूत इरादा। मृणल पांडे के 'परिधि पर स्त्री' में शोषित ग्रामीण, शहरी कामकाजी महिलाओं के दुख:दर्द को प्रभावशाली ढंग से रेखांकित किया है। सुधा अरोडा की 'अन्नपूर्ण मंडल की आखरी चिट्ठी में ससुराल में प्रताड़ित नारी की व्यथा को बखूबी अभिव्यक्ति मिली है। नारीवादी साहित्य नारी की ऐसी कल्पना करता है कि वह स्वयं को और समाज को भी बदले।

Scanned with OKEN Scanner

आज आधुनिक कालखंड में हिंदी नारीवाद के क्षेत्र में कोई भी क्षेत्र वर्ज्य नहीं है। अनादि काल से पुरुष के शारिरीक संबंधों के वर्चस्ववाले क्षेत्र में भी नारीवाद ने प्रवेश किया है। इस क्षेत्र में वह अधिक खुलेपन की माँग करती है। नारीवादी साहित्य पाश्चात्यों की तरह किसी के भी साथ स्वच्छंद रूप से शारिरीक संबंध प्रस्थापित करने देने की माँग करती है। नारीवादी साहित्य पाश्चात्यों की तरह किसी के भी साथ स्वच्छंद रूप से शारिरीक संबंध प्रस्थापित करने देने की माँग करता है। इनमें गीताश्री, उषा प्रियंवदा, कृष्ण सोबती जी ने अपनी लेखनी चलाई है।

मालती जोशी के 'पाषाणयुग' में विधुर एवं बेमेल विवाह के पक्ष को उठाया है। इसमें नारी मन की छटपटाहट, घुटन और नारी की पीड़ा को चित्रित किया है। शिवानी के 'कृष्णकली' में कुष्ठरोग से पीड़ित माता-पिता की संतान कृष्णकली के जीवन की गाथा है। शिशाप्रभा शास्त्री का 'नवि' उपन्यास शादी के पहले कुमारी माता बनने की उत्पन्न विसंगती का चित्रण है। मेहरुन्निसा परवेज का 'औरों की दहलीज' उपन्यास नारी जीवन के अधुरेपन को चित्रित करता है। ममता कालिया का 'बेघर' उपन्यास पति-पत्नी के भीतर अविश्वास को रेखांकित करता है।कुल मिलाकर हिंदी का आधुनिक कथा-साहित्य नारी की बदलती मानसिकता को अंकित करता है।

निष्कर्षत: हम कह सकते है कि नारीवादी साहित्य शोषणरहित मानतावादी व्यवस्था की स्थापना कर स्त्री को मानवीय अधिकार दिलाना चाहता है। राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक अधिकार के लिए नारीवाद लड़ता है। अत: नारी को मानवोचित अधिकार दिलाना नारीवादी साहित्य का अंतिम ध्येय रहा है। जो बात नारी स्वयं नहीं कह सकती, वह बातें वह साहित्य के समाज तक पहुँचाने में सफलता प्राप्त कर रही है। इक्कीसवी शती ने संगणक, इंटरनेट और साइबर की सौगात देकर नारी की सोच को बदला है। नारी लेखन ने इस परिवर्तन को खुले दिमाग से स्वीकारा है, परंतु नारी की आत्मप्रतिष्ठा, आत्मसम्मान जब तक समाज स्विकार नहीं करता, तब हमारे समाज में नारी-विमर्श का चिंतन होता रहेगा। इस चित्र को बदलने के लिए समाज में नारी को पुरुषों के बराबर स्थान सम्मान के साथ मिलना चाहिए।

संदर्भ सूची:

१) भारतीय नारी : अस्मिता और अधिकार –आशारानी व्होरा.
२) हिंदी के समकालीन महिला उपन्यासकार – डॉ. एम. वेंकटेश्वर.
३) स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार – डॉ. वैशाली देशपांडे.
४) आठवे दशक के हिंदी उपन्यास – डॉ. विनोद सिंह राव.
५) महिला सशक्तिकरण – कमलेश गुप्ता.

Scanned with OKEN Scanner